ग़ज़ल 20

-रविशंकर श्रीवास्तव

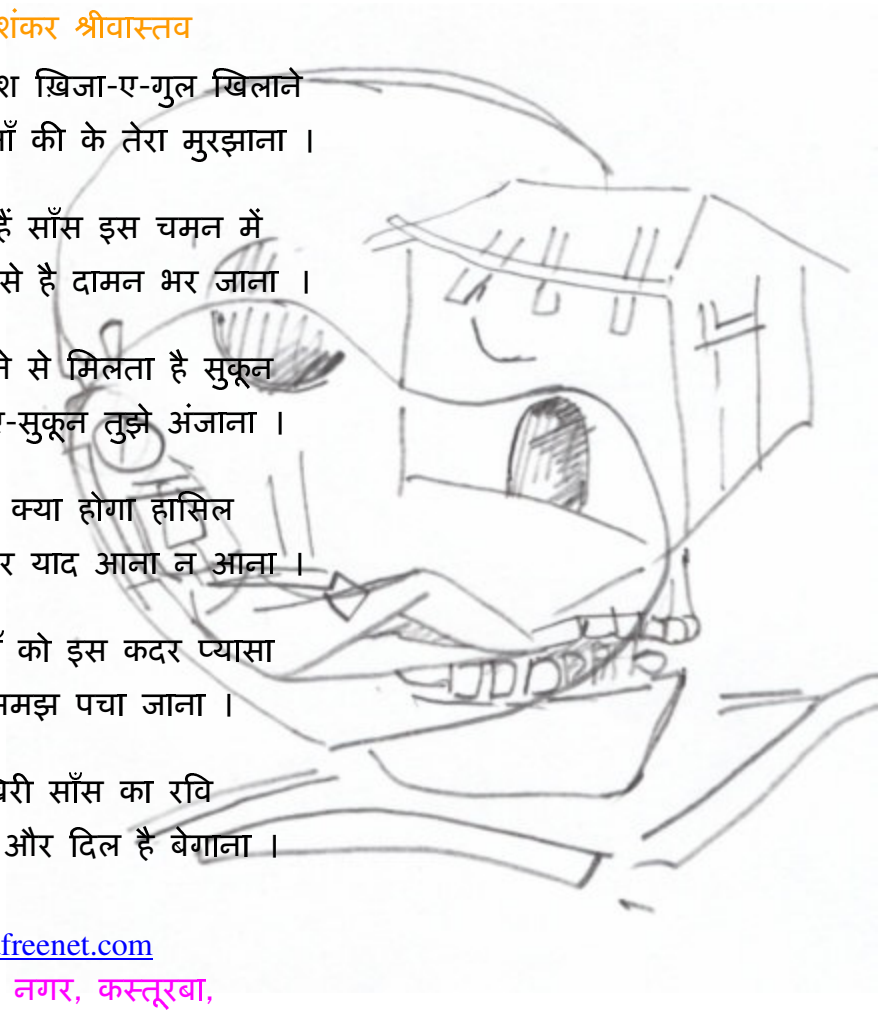

इस कदर कर कोशिश ख़िजा-ए-गुल खिलाने
बने मुस्कान गुलिस्ताँ की के तेरा मुरझाना ।

माना खार भी लेते हैं साँस इस चमन में
इक फूल की खुशबू से है दामन भर जाना ।

इन अश्कों के टपकने से मिलता है सुकून
दो बूंद देगा सागर-ए-सुकून तुझे अंजाना ।

उन्हें याद दिलाने से क्या होगा हासिल
याद रहें वो क्या फिर याद आना न आना ।

करले तू अपनी जुबाँ को इस कदर प्यासा
ज़हर भी तू अमृत समझ पचा जाना ।

न कर इंतजार आखिरी साँस का रवि
हर साँस आखिरी है और दिल है बेगाना ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001